

— समनु *empfinden, geniessen*: अर्त्तवृत्तसवम् RAGH. 9, 18.
 — अत्तर *eindringen in*: कदा न्वर्त्तवृत्तौ भुवानि RV. 7, 86, 2. अत्त-
 र्भ्यं रहस्येषु तैर्वशीक्रियते हि सः KATHĀS. 34, 204. *enthalten sein in*:
 वैदिके कर्मयोगे तु सर्वाण्येतान्यशेषतः । अत्तर्भवति क्रमशस्तस्मिंस्तस्मि-
 न्क्रियाविधौ ॥ M. 12, 87. अत्तर्भवाणि VOP. 8, 22. — Vgl. अत्तर्भाव figg.
 — अय *wegbleiben, fernsein, fehlen*: अयं भूतु डुर्मतिः RV. 1, 131, 7. म-
 हुतो मायं भूतन 7, 39, 10. 4, 34, 11. 33, 1. 9, 83, 1. मार्केदेवानामयं भूरिह
 स्याः 10, 11, 9. 67, 11. AV. 4, 33, 7. राष्ट्रार्त्तभूतः *nicht zur Herrschaft ge-*
langt TS. 3, 4, 9, 2. 7. — Vgl. अयभूति.
 — अयि 1) *in Etwas gerathen, unter Etwas fallen, in Etwas sein*;
 mit loc.: अय्यर्भूमिं सुकृतस्य लोके AV. 2, 10, 7. तस्य वयं हेळसि मायि
 भूम 7, 20, 3. 57, 4. — 2) *Theil haben an*: अयमग्ने वरिता वे अयभूतिं RV.
 10, 142, 1. वे इन्द्रायभूमिं विप्राः 2, 11, 12. अयिन्द्रः समयोवे ऽभवत् AIT.
 BR. 7, 28. — Vgl. 1. अय् mit अयि.
 — अयि 1) *übertreffen, überlegen sein, überwältigen, hart bedrängen.*
heimsuchen: भुवद्विअमभ्यादेवमोर्त्तसा RV. 2, 22, 4. त्वष्टारमिन्त्रे जनुषामि-
 भूयं 3, 48, 4. 59, 7. 8, 31, 13. 81, 6. 7, 21, 6. अयि यो विश्वा भुवना वभूव
der
grösser ist als alle Welt 4, 16, 5. अयि हि वभूय रोदसी 8, 87, 5. 10, 3, 2.
 99, 3. अयि यो मंदिना भुवम् 119, 8. VS. 38, 17. AV. 5, 11, 7. 6, 129, 2.
 TBR. 1, 4, 9, 4. ÇAT. BR. 1, 6, 3, 33. 2, 1, 2, 14. 11, 1, 6, 12. अयि द्विपत्तं भवि-
 ष्यामि 12, 4, 3. ÇĀṆKH. ÇR. 10, 13, 21. LĀṬJ. 3, 11, 4. TAITT. UP. 3, 10, 6.
 KĪND. UP. 1, 2, 1. PRAÇNOP. 4, 6. KAUSH. UP. 4, 20. MAITRĪUP. 2, 6, 7. 3, 1.
 3 (अयिभूयति pass.). 6, 27. med.: अमुरानभिवेमहि ÇĀṆKH. ÇR. 14, 23, 2.
 38, 3. — तस्माद्भिवत्रयेषु (रात्रौ) सर्वभूतानि तेजसा M. 7, 5. MBH. 4, 30.
 सर्वाश्चाभ्यभवत्कृष्ण रूपेण यशसा अया 2367. सिंहेनादं च सैन्यानां भोम-
 सेनरवो ऽभ्यभूत् 6, 1646. Spr. 1120 (अतिभवति MBH. 12, 4006. अयि^o
 13, 3127). MBH. 14, 177. HARIV. 6936. 8732. 8980. R. 6, 104, 13. Spr. 3090.
 RAGH. 4, 56. 8, 36. RT. 6, 29. KATHĀS. 33, 20. एषा ते भास्वती कीर्तिर्ली-
 कानभिविष्यति (vgl. अयो व उशती कीर्तिर्लीकानभिविष्यति BUĀG. P.
 4, 30, 11) *wird länger bestehen als* MBH. 3, 10592. शत्रुभिर्नाभिवूयते *wird*
nicht überwältigt, bestegt M. 7, 179. MBH. 3, 11401. 11964. 12275. R. 1, 31, 4.
 VARĀH. BRH. S. 48, 13. MĀRK. P. 63, 18. (स्त्रीभिः) याभिरन्याभिभूताभिः (so
 ist mit der ed. Calc. zu lesen) RĪGA-TAR. 4, 608. Verz. d. Oxf. H. 258, b.
 28, 30. P. 1, 4, 3, 33. Sch. एतानि वीर्याणि स्वबलगुणोत्कर्षाद्रसमभिभूतात्म-
 कर्म कुर्वति SUGR. 1, 148, 10. SĀH. D. 23, 10. MBH. 12, 8512. VEDĀNTAS.
 (Allah.) No. 110. ÇĀṆK. zu BRH. ĀR. UP. S. 66. अयिभूत् = पराजित *be-*
steigt H. 803. अय्यभावि भर्ताप्रजस्तया वात्ययेव *sie kam über ihn wie*
ein Sturmwind RAGH. 11, 16, 84. मुधैव चालयसि (अशोक) वाताभिमूत् शि-
 रः Spr. 2380. ममापि सत्त्वैरभिवूयते गदाः ÇĀK. 93, 5. अयिभवति (उत्का)
 यतः पुरं वलं वा भवति भयं तत एव पार्थिवस्य VARĀH. BRH. S. 33, 30. अ-
 भ्यभूत्तिलयं धातुः *er machte einen Angriff auf die Wohnung des Bruders*
 BHATT. 6, 117. यौर्न भात्यभिभूताका अतिभूताका *die ältere Ausg.*) so
 v. a. राक्षभिभूताका HARIV. 2397. कुलं कृत्स्नमधर्मो ऽभिवत्पुत *heimsu-*
chen BHAG. 1, 40. विद्याहीनान् — लोभो ऽप्यभिविष्यति MBH. 3, 13024.
 अस्मात्संतापज्ञं दुःखं न त्वामभिविष्यति R. 2, 32, 32 (49, 33 GORR.). उत्तमं
 सुचिरं नैव विपद्ये ऽभिवत्पुत्सम् DRSHTĀNTAÇ. 79 bei HAR. 224. ये वि-
 षादो ऽभिवति Spr. 4753. माम् — आधयो ऽभिविष्यति MBH. 1, 4704.
 नाप्रतः पथ्यमेवात्रं व्याधयो ऽभिवति हि BUĀG. P. 6, 1, 12. रोगाभिमूत्

V. Theil.

Spr. 4102. 967. व्यसनाभिमूत् 2718. रागाभिमूत् 2396. च्छुच्येन MBH. 3,
 533. कामाभिमूत् Spr. 3908. R. 1, 63, 12. PRAB. 23, 18. कोपाभिमूत् R. 1,
 33, 2. चित्तासंतनिः PRAB. 94, 13. दौर्मर्त्स्येन PĀNĀT. 9, 23. पतगोन्द्रभाभि-
 भूता MĀKĪ. 10, 19. स्वाण्डभङ्गाभिमूता *die das Unglück getroffen hatte, dass*
ihre Eier zerbrochen worden waren, PĀNĀT. 80, 10. महासत्त्वो कर्षशाकाय-
 नभिमूत्स्वभावः SĀH. D. 33, 1. Jmd seine Uebermacht fühlen lassen, demü-
 thigen Spr. 3782. अयिभूत् *gedemüthigt* AK. 3, 1, 40. H. 440. KATHĀS. 20, 127.
 — 2) *sich Jmd (acc.) zuwenden, kommen zu*: अयो षु पाः शतं भवास्पूति-
 मिः RV. 4, 31, 3. परं योनेरवरं ते कृणोमि मा त्वां प्रजाभिभूत् AV. 7, 33, 3.
 mit loc.: पुष्यात्तेमे अयि योगे भवति RV. 5, 73, 5. — Vgl. अयिभव figg.
 अयिभाविन् अयिभु figg. अयिभूय figg. — caus. *überwältigen*: विक्राता ब-
 लवत्तश्च राधवेण च रत्तितः । नाभिभावयितुं शक्याः R. 6, 6, 5. — desid.
übertreffen —, überlegen sein wollen: द्विपतो धातृव्यानभिवुभूयन् ÇĀṆKH.
 ÇR. 14, 23, 5.

— अययि, partic. भूत् PRAB. 86, 18 v. 1. für प्रत्ययिभूत्.

— प्रत्ययि, partic. भूत् *überwältigt, besiegt* PRAB. 86, 18.

— आ 1) *gegenwärtig —, in oder bei Etwas sein; dasein, vorhanden-*
sein: आ देवानामभवः केतुरग्ने RV. 3, 1, 17. 4, 3, 3. 4, 31, 1. 5, 19, 5. यत्सोमे
 सोम अर्भेवः 8, 82, 17. 91, 18. स विश्वा भुव अर्भेवः 10, 133, 5. AV. 3, 29, 2.
 5, 1, 1. 7, 1, 2. यज्ञो वभूव स आ वभूव 3, 2. आभूतो भूतः स उं जायते पुनः
 11, 4, 20. वाजस्यं नु प्रसव्य आ वभूव VS. 9, 25, 22, 2. 32, 5. *bestehen, fort-*
fahren zu leben: कार्यं भवति कयमाभवति MBH. 1, 3605. 3608. — 2) *her-*
vorkommen, entstehen aus (abl.): विद्वा तमुत्सं यतं आबभूव RV. 10, 84,
 5. 129, 6. 7. 168, 3. ये विद्युत् आबभूवुः AV. 10, 4, 23. यमस्य लोकादध्या
 वभूविद्य 19, 36, 1. यत्समूलमुदक्युर्वत् न पुनराभवेत् *würde er nicht wie-*
der wachsen ÇAT. BR. 14, 6, 9, 34. — Vgl. आभू. आभूति figg.

— अन्वा *nachfolgen, nachthun*: तस्माद्दिदमसुरा नान्वाभवति AIT. BR.
 1, 24. देवाः सुवर्गं लोकामंयते ऽमन्यत मनुष्या नो ऽन्वाभविष्यति TS. 6,
 3, 2, 7. 10, 3, 6, 3, 1. यत्र होष्यामि तदन्वाभविष्यति (असुराः) KĀṬH.
 27, 8. 28, 9.

— अन्या Jmd (acc.) *begegnen, accidere alicui*: तं यद्येतेयो त्रयाणामेकं
 चिदकाममभ्याभवेत् *wenn ihm eins von den dreien unabsichtlich geschieht*
 AIT. BR. 3, 46. यद्येनं तीरं केवलं पाने ऽभ्याभवेत् *wenn es ihm begegnet*
launere Milch zu trinken ÇAT. BR. 2, 3, 1, 16.

— पर्या *sich umdrehen*: पर्याभूद्वा अयनेकपालो भोक्षिष्यति राष्ट्रम् ÇAT.
 BR. 2, 4, 3, 10.

— प्रत्या Jmd (acc.) *zur Hand oder zu Diensten sein*: श्रोषधयो वै
 प्रजाः प्रभवन्तीः प्रत्याभवति TS. 1, 7, 2, 3.

— आविस् s. u. d. W. — प्राविस् *erscheinen*: श्रीसिद्धिनाथ इति को
 ऽपि युगे चतुर्थे प्राविक्रभूव Verz. d. Oxf. H. 110, a. ÇI. 36.

— उद् 1) *hervorkommen, entstehen*: नोद्भवत्यमृतं च तत् MBH. 1, 1140.
 HARIV. 11891. 11963 (med.). अङ्गात्षण्णमुखस्योद्भवतुः । पुत्रौ KATHĀS. 20,
 92. 39, 145. उद्भवतीत्रो दुर्भितः 27, 94. उद्भूमुरजधानः 2, 34. अत्तरि-
 तात्सरस्वती 6, 20. 2, 68. 7, 95. 10, 94. 28, 91. 40, 78. अकस्माद् उद्भवद्देव
 KĀM. NĪTIS. 16, 23. सैन्यानामकस्माद् उद्भूत्कलिः RĪGA-TAR. 5, 216. उद्भूत्
hervorgegangen, entstanden: शरीरमिदं मैथुनदेवोद्भूत् MaitrĪUP. 3, 4.
 धन्वत्तरेरनुद्भूत् वियम् R. GORR. 1, 46, 31. निर्मलाभिश्च मुक्ताभिर्मणिभिश्च
 महाप्रैः । उद्भूत्पुलिनास्तत्र MBH. 13, 3826. तीरो देवकुलोद्भूत् *entstan-*